संवेदनाओं का संवाददाता

सुरेंद्र प्रताप सिंह

लेखन, संयोजन, संपादन

निर्मलेंदु

सुरेंद्र प्रताप सिंह

संवेदनाओं का संवाददाता

लेखन, संयोजन, संपादन

निर्मलेंदु

संपादन में विशेष सहयोग

नीरेंद्र नागर

संयोजन में सहयोग

राजेश मित्तल, के के सलूज, आईपीएस यादव, कनिका, अर्घ्य प्रदीप, सत्येंद प्रताप सिंह (एस पी सिंह के छोटे भाई)

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2026

© निर्मलेंदु

अनुक्रम

प्राक्कथन

एसपी ही क्यों? 5

वह काला और मनहूस दिन … 6

निर्मलेंदु

संपादक या ब्रांड मैनेजर ?: ढनाढ्य वर्ग की 'रखैल' बन गई है पत्रकारिता 18

एसपी, रविवार और आज तक पुराण 26

और सदा के लिए बिछड़ गए 88

तो यह था, एसपी का महत्व 131

"क्षमा बड़न को चाहिए" 142

मिशनरी पत्रकारिता के खिलाफ एक "मिशनरी" व्यक्तित्व 149

अत्याचार देखते ही उबल पड़ते थे एसपी 160

एक बार तो हार सकते थे? 180

नरेंद्र प्रताप सिंह

पत्रकार के रूप में सबसे अलग था वह 186

एमजे अकबर

इस्तीफे की ड्राफ्टिंग की होती तो शायद वह बच जाता... 193

बिजित बसु

और मैं एसपी के प्रेम में पड़ गया 199

रजनीकांत कटारिया
खुद्दारी और उसूलों के पक्के थे वे 203

आईपीएस यादव
असली जीवन का एक एंकर 205

अजय कुमार
मूषक दौर का हिस्सा नहीं था असली एसपी 212

उदयन शर्मा
देने और सहने: दोनों कला में माहिर थे तुम 224

विश्वनाथ सचदेव
विरोधियों की सकारात्मक बातें भी स्वीकार करते थे एसपी 232

मनमोहन सरल
तब वे भगवान शंकर की तरह हो गए थे उदार 237

हरीश तिवारी
वक्त से दस साल आगे 243

डॉ. पुष्पा भारती
रसोई में जा कर देखा, सब्जी भून रहे हैं सुरेंद्र 243

डॉ. उषा मंत्री
दिल्ली ने उसे चौकन्ना बना दिया 251

गोपाल शर्मा
ईमानदार, आदर्शवादी, स्पष्टवक्ता थे एसपी 259

संजीव चट्टोपाध्याय
एसपी ने कहा था 'मैं तुम्हें कलम दे सकता हूं, बंदूक नहीं' 261

संतोष भारतीय
"नतीजे से ज्यादा नीयत देखते थे सुरेंद्र जी" 264

नीरेंद्र नागर
धीरे-धीरे वे व्यवस्था के अंग बन गए 274

विजय कुमार गुप्त
हिंदी समाचारों का हीरो नंबर वन 281

अजय ब्रह्मात्मज
देह की भाषा में बतियाता खबरची 285

अनिल यादव
बुलबुले की तरह आया और तूफान मचा कर चला गया समाचारों का "घुमंतू" डाकिया 295

रूमा सेनगुप्ता
पाखंड से सख्त नफरत थी उन्हें 304

दिलीप मंडल
मुड़-मुड़ कर देखते थे प्रिंट मीडिया की ओर 312

पुण्य प्रसून वाजपेयी
अमृत बांटा जहर पीया 321

हेमंत स्नेही
महिलाओं को बराबर मौका देने के हिमायती 322

इरा झा
करुणा की ओस से भीगे सुरेंद्र भाई 331

संतोष श्रीवास्तव
संस्कारों में था बड़ों का सम्मान करना 342

योगेंद्र कुमार लल्ला
फिल्मी कलाकारों की दृष्टि में एसपी 355

पत्रकार और बुद्धि-जीवियों की नजर में ... 360

“रविवार” इतना पापुलर क्यों था ? 369

प्राक्कथन

एसपी ही क्यों?

अच्छी भूमिका, अच्छे लक्ष्य, अच्छे विचार, अच्छे कर्म और अच्छे लोगों को हमेशा याद किया जाता है, मन में भी, यादों में भी और जीवन में भी! इसीलिए मेरे अंत:करण ने मुझे निर्देश यह दिया कि जो कुछ भी मुझे अच्छा लगे, वह सब कुछ लिखूं! जो कुछ भी मुझे उचित लगता है, उसे करने का दिल से प्रयत्न करूं। मैंने लिखने के लिए कलम इसीलिए उठाई, क्योंकि मेरे अंत:करण ने मुझे निर्देश दिया कि यह काम करो! यह काम करोगे, तो तुम्हें आत्मसंतुष्टि मिलेगी। दरअसल, इस विशाल जगत में मनुष्य और दूसरे कई तरह के प्राणी रहते हैं। मनुष्य और अन्य प्राणियों में तो आहार, निद्रा, भय और मैथुन एकसमान ही हैं, लेकिन ईश्वर ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में बुद्धि केवल और केवल मनुष्य को ही विशेष रूप से दी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ईश-निर्मित जगत का आज तक का अंतिम सर्जन ही मानव है, क्योंकि प्रभु ने अपने लाडले बेटे मानव को मन, बुद्धि और चित्त देकर सर्वश्रेष्ठ बनाया है। प्रभु की प्रदान की हुई इस बेजोड़ शक्ति से ही मानव समस्त संसार के ऊपर न केवल शासन कर रहा है, बल्कि भविष्य में भी करता रहेगा। इसलिए हम कह सकते हैं कि विचार-शक्ति ही मानव की श्रेष्ठ शक्ति है। ऐसी स्थिति में यदि हम यह कहें कि विचारपूर्वक जीवन जीनेवाले मनुष्य

को ही सच्चे अर्थ में मानव कहा जाता है, तो शायद गलत नहीं होगा। अब प्रश्न यह है कि सिर्फ मानव शरीर मिला, आकार-प्रकार मिला, बुद्धि-विवेक मिला, क्या सिर्फ इसीलिए हम मानव बन गए? नहीं, मेरी समझ से मानव कहलाने के लिए हमारे अंदर निम्न चार गुण होने चाहिए और वे हैं - कृतज्ञता, अस्मिता, भावमयता, कार्यप्रवणता, जो कि एसपी सिंह में थे। किसी से लगाव उसके व्यवहार की वजह से होता है, न कि उसके चेहरे से, एसपी सिंह से भी लगाव उनके व्यवहार के कारण हुआ है, न कि उनके चेहरे के कारण! दरअसल, इसीलिए यह हमारा परम-कर्तव्य बन जाता है कि ऐसे व्यक्ति पर हम लिखें और, इसीलिए मैंने एसपी के बारे में लिखना श्रेयस्कर समझा, क्योंकि इससे मुझे मनुष्य होने का अर्थ और सही मतलब समझ में आ गया।

वह काला और मनहूस दिन ...

निर्मलेंदु

समय, सेहत, संस्कार और संबंध ... इन चारों पर कीमत का लेबल नहीं लगा होता है, लेकिन जब हम इन्हें खो देते हैं, तब इनकी कीमत का अहसास होता है, ठीक उसी तरह एसपी सिंह को खोने के बाद ही हमें उनकी कीमत का अहसास हो रहा है ... समय से पहले ही वह हमें छोड़ कर चले गये। किसी भी मनुष्य में गुण 36 नहीं, केवल चार चाहिए! अच्छा व्यवहार, साफ नियत, नेक दिल और ईमानदारी! बस एसपी सिंह के इन्हीं चार गुणों के कारण हम उन्हें आज भी याद करते हैं।

वह एक काला दिन था, जब टीवी पर खबरों का संसार रचने वाला "शख्स" सदा के लिए चला गया। कोई कहता है सफल होने के लिए टैलेंट चाहिए, कोई कहता है पैसा चाहिए, कोई कहता है अच्छा दिमाग चाहिए, कोई कहता है मेहनत चाहिए, कोई कहता है काम में भक्ति चाहिए, कोई कहता है ईमानदारी चाहिए! हां, यह सच है कि यह सब गुण चाहिए, लेकिन इसके साथ ही साथ, अगर एक अच्छा बास मिल जाए, एस पी सिंह की तरह, तो वह असफल कभी नहीं होगा! जी हां, कभी असफल नहीं होगा वह, क्योंकि एसपी सिंह उसके साथ हैं।